2021 - 2022

Dr. Sheela. T. Nair

मई : 2022

ISSN 2278 - 6880
Approved by UGC

संग्रथन

हिन्दी विद्यापीठ (केरल) तिरुवनन्तपुरम

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
Dr. Sheela. T. Nair

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE

Scanned with CamScanner

संग्रथन का संरक्षक मण्डल

आचार्य राजेन्द्र नाथ मेहरोत्रा, 'हिन्दी-विश्व गौरव-ग्रन्थ' शृंखला के प्रणेता एवं प्रकाशक, ग्वालियर (म.प्र.), मो:९८२५११००७७
प्रो.(से.नि.).डॉ.टी.जी.प्रभाशंकर'प्रेमी',विश्वविख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं शिक्षाविद्,बंगलूर,मो:९८८०७-८३२८८
श्री विमलकुमार बजाज,प्रखर समाजसेवी,व्यवसायी एवं अध्यक्ष, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी,शिलांग,मेघालय,मो:९४३६३-११८११
श्री योगेन्द्र कुमार, नोइडा (उ.प्र)　　　डॉ.उमाकुमारी.जे.

सम्पादक मण्डल

प्रोफ.हिल्डा जोसफ	प्रोफ.ए.मीरा साहिब
डॉ.एम.एस.राधाकृष्ण पिल्लै	श्री.के.जनार्दनन नायर
डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी	प्रोफ.एन.सत्यवती
डॉ.श्रीलता.के	डॉ. सुनिलकुमार.एस
डॉ. सुमा.एस	डॉ.सोफिया राजन

इस अंक में....

संपादकीय : मलयाळम के महाकवि कुमारन आशान की १५०वीं सालगिरह तथा कालजयी दो काव्य-कृतियों की रचना शताब्दी............	डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन	5-6
मन की बात (अप्रैल २०२२)	श्री नरेन्द्र मोदी	7-15
भाषा के विविध रूपों में प्रयुक्ति	प्रो.(डॉ).आर.जयचन्द्रन	16-20
रामायण के विभीषण	डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी	21-24
सुषम बेदी की कहानियों में अभिव्यक्त प्रवासी जीवन	डॉ.आशीवाणी.के.	25-27
तलाक के परिणामस्वरूप शिशु मन की समस्याओं का चित्रण	कृष्णा ५ता	28-35
पाठकों के पत्र		35
समकालीन हिन्दी कहानी में अभिव्यक्त समकालीन जीवन दृष्टिकोण	लिजु.एम.एल.	36-37
आतंकवाद का प्रभाव एवं भारत के सामाजिक वातावरण और बेरोज़गारी	लक्ष्मी.सी.बी.	38-39
कृष्णा सोबती का संस्मरण साहित्य	डॉ.षीला.टी.नायर	40-43
समकालीन हिन्दी कहानियों में 'मैं' अस्मिता	काव्या नायर.बी.	44-49
बदलते पारिवारिक-सामाजिक रिश्ते 'दौड़' के संदर्भ में	डॉ.ज्योति.एन.	50-52
राष्ट्र-प्रेमी, हिन्दी मनीषी, कर्मयोगी डॉ.एच.परमेश्वरन स्मृति-गाथा	डॉ.राजेन्द्रनाथ मेहरोत्रा	53
डॉ.एच.परमेश्वरन स्मृति-गाथा (स्मृति-ग्रन्थ)	डॉ.रामेश्वर प्रसाद गुप्त	54

मुखचित्र - कुमारनाशान

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA-689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
Dr. Sheela T Nair

Scanned with CamScanner

कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती का संस्मरण साहित्य

डॉ.षीला.टी.नायर

आधुनिक काल में हिन्दी गद्य की कई विधाएँ विकसित हुई, उनमें संस्मरण एक आकर्षक विधा है। इस विधा का सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के स्मरण से जुड़ा है। हर-एक व्यक्ति के जीवन में सुखद और दुखद कई यादें होती हैं। हर एक व्यक्ति अपने जीवन में कई व्यक्तियों के सम्पर्क में आ जाता है। सामान्य व्यक्ति, उन क्षणों को विस्मृत कर देता है। किन्तु संवेदनशील और भावुक व्यक्ति इन स्मृतियों को शब्द-बद्ध कर देता है। इस प्रकार संस्मरण साहित्य की सृष्टि होती है। लेखक अपनी स्मृति के आधार पर अपने सम्पर्क में आए व्यक्तियों के जीवन के विशिष्ट पहलुओं को कथात्मक शैली में अंकित करता है। संस्मरण-के मूल में अतीत की स्मृतियाँ निहित होती है, जो व्यक्तिगत सम्पर्क का परिणाम होती है। लेखक उसे सजीव रूप में प्रस्तुत करता है। संस्मरण आत्मनिष्ठ और कलात्मक आधुनिक विधा है। संस्मरण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें केवल महत्वपूर्ण बातें ही नही, अपितु छोटी से छोटी बातों को भी सुन्दरता से अंकित किया जाता है।

संस्मरण की सफलता के लिए कुछ गुणों का होना भी अनिवार्य है। पहला, लेखक में सहानुभूति पूर्ण हृदय की आवश्यकता है। इससे व्यक्ति के स्वभाव में झाँकने का अवसर मिलता है।

दूसरा गुण है- व्यक्तिगत सम्पर्क इससे व्यक्ति की रुचि-अरुचि, आकर्षण-विकर्षण का पता चलता है। व्यक्तिगत सम्पर्क के द्वारा वातावरण आत्मीयता पूर्ण हो जाता है। तीसरा गुण है - लेखक के स्वनिरीक्षण की क्षमता। इसमें लेखक को स्वभाव का निष्पक्ष विवेचन करना होता है। चौथा गुण है रोचकता। संस्मरण रोचक होने पर पाठक के मन में अमिट छाप छोड़ देता है।

संस्मरण-विधा वैयक्तिक होने के कारण यह कई रीतियों से लिखा जा सकता है या इसके कई भेद हो सकते हैं-

१. आत्म कथात्मक संस्मरण
२. यात्राविवरणात्मक संस्मरण
३. डायरीनुमा संस्मरण
४. जीवनीमूलक संस्मरण
६. श्रद्धांजलिमूलक संस्मरण
६. मुल्यांकनपरक संस्मरण
७. पत्रात्मक संस्मरण आदि।

हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु-युग से ही संस्मरण साहित्य का लेखन प्रारंभ हो चुका था। आरम्भ में इस विधा का प्रकाशन सुधा, माधुरि, सरस्वती, विशाल भारती, चाँद जैसी पत्र-पत्रिकाओं में हुआ करता था। हिन्दी के प्रथम संस्मरणकार के रूप में तीन नाम सामने आते हैं।

१. बाबू बाल मुकुन्द गुप्त (१९०७) प्रताप नारायण मिश्र पर

२. स्वामी सत्यदेव परिव्राजक (१९०५) अमेरिका की यात्रा पर आधारिक संस्मरण

३. पंण्डित पद्मसिंह शर्मा ने अनेक साहित्यकारों के रसभीने

Dr. Sheela T. Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
DEPARTMENT OF HINDI * N.S.S.C

संस्मरण प्रस्तुत किये।

भारतेन्दु हरीचन्द्र का 'कुछ आप बीती, कुछ जगबीती' एक सुन्दर संस्मरण है। संस्मरण साहित्य को समृद्ध करने में पं.बनारसीदास चतुर्वेदी (फिजी द्वीप में मेरे २१ वर्ष) पं श्रीरामशर्मा (सन् बयालीस के संस्मरण) और महादेवी वर्मा (अतीत के चलचित्र, पथ के साथी) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आधुनिक संस्मरण-लेखकों में श्रीराजेन्द्रलाल हाण्डा (दिल्ली में बीस वर्ष) श्रीमती शिवरानी (प्रेमचन्द घर में) श्रीनिधि विद्यालंकार (शिवालिक की घाटियों में) राजा राधिका रमण प्रसाद (पूरब और पश्चिम, हवेली की झोंपडी, ये और हम) कृष्णा सोबती (हम हशमत) भारत भूषण अग्रवाल, विष्णु प्रभाकर, निर्मलवर्मा आदि कई नाम प्रमुख हैं।

कृष्णा सोबती द्वारा रचित संस्मरण 'हम हशमत' एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस संस्मरण को लेखिका ने इस एक अलग ढंग से प्रस्तुत किया है। संस्मरण में कृष्णा सोबती ने अपने नाम के बदले एक पुरुष नाम 'हशमत' स्वीकार किया है। परिचित व्यक्तियों और 'हशमत' नामक पुरुष के बीच होने वाली घटनाओं, बातचीत और जीवनानुभवों को इस संस्मरण में प्रस्तुत किया गया है। लेखिका स्वयं मानती है कि स्त्री या पुरुष-लेखन में कोई अलग-अलग चीज नहीं है। लेखिका ने इसी सोच को 'हम हशमत' में हशमत के माध्यम से सिद्ध कर दिया है। हशमत जिनसे भी मिले, उनके जीवन प्रवाह को 'हम हशमत' में अंकित किया।

निर्मल वर्मा:- जब निर्मलवर्मा साहित्य जगत में 'नये आये' एक दिन निर्मलवर्मा और हशमत की मुलाकात इत्तफाक से दिल्ली के रेस्तराँ में हो गई। निर्मलवर्मा के चेहरे पर ताजे खून की चमक थी- माथे पर गिरते बालों में तश्नुम था। उनका लेखन भी नाम की तरह निर्मल और कुछ अपने ही ढंग का था। हशमत लगातार निर्मल को पढ़ते रहे हैं। निर्मल का साहित्य आम आदमी का 'फिजी द्वीप में मेरे २१ वर्ष' साहित्य होकर भी मानसिक रूप से अति परिष्कृत वर्ग का साहित्य है। हशमत कहते हैं - लिखने वाले साथियो, आप वक्त न गंवाकर निर्मल के नक्शे कदम पर चलिए।

रमेश पटेरिया:- उनका दूसरा संस्मरण मूर्तिकार रमेश पटेरिया पर है। हशमत, शनिवार शाम को अपने दोस्त चित्रकार सुधीर पन्त से मिलने जाते हैं। सुधीर पन्त हमेशा किसी कलाकार, चित्रकार, या मूर्तिकार को लेकर बैठा रहता है। हशमत को इन कलाकारों का गंभीर माहौल पसंद नहीं था। वे कहते हैं- देखो, पटेरिया रमेश, तुम मूर्तिकार होंगे अपने घर पर- बिकती होंगी तुम्हारी मूर्तियाँ- दस-दस बीस-बीस हजार में पर यह चिंतक बनने का ढोंग क्या? पटेरिया जवाब देते हैं कि जीवन में बहुत साधना की है, तकलीफ और संघर्ष झेला है किन्तु चंद सतरे तारीफों के और कुछ नहीं मिला है।

भीष्म साहनी:- संस्मरण फ्लैशबैक शैली में लिखा है। दिल्ली के कनाट प्लेस के रेस्तराँ में हशमत, भीष्म साहनी से मिलते हैं। गोरा-चिट्टा जवान चेहरा। भीष्म नाम के बिल्कुल विपरीत उनका छोटा डील-डौल। वे कॉफी और सिगरेट पीने का शौक रखते थे। लेखन में सहज, साधारण पात्रों की बहुलता लेकिन प्रस्तुति में अनोखापन था। भीष्म का पेशा है, अंग्रेज़ी पढ़ाना और हिन्दी में साहित्य लेखन। देश-विभाजन का दर्द हमेशा भीष्म साहनी को रहा। बंटवारे के तूफान को उन्होंने स्वयं झेला। परिणाम था- तमस और तमस के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार।

मियाँ नसीरुद्दीन:- नामक संस्मरण में छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने वाले नसीरुद्दीन मियाँ का परिचय है। यह उनका परम्परागत धंधा था।

उनके वालिद भी यही करते थे। मियाँ कहते हैं - गये वे कद्रदान जो पकाने-खाने की कद्र करना जानते थे।

कृष्ण बलदेव वैद :- यह संस्मरण यात्रा विवरणात्मक संस्मरण है। कृष्ण बलदेव हशमत से मिलने शिमला आते हैं। दोनों शिमला घूमने जाते है। बातों ही बातों में कृष्ण बलदेवजी दकियानूसी प्रकाशकों पर प्रहार करते है कि वैद जी नये लेखक होने के कारण ये प्रकाशक उनके साहित्य को नकार रहे हैं। इस बीच रिसर्च के बारे में अमेरिका जीवन में अकेलापन और नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि पर चर्चा करते है।

सरदार जग्गा सिंह :- जग्गासिंह दिल्ली टैक्सी स्टैण्ड का टैक्सी ड्राइवर है। जग्गासिंह बताता है कि दिल्ली के टैक्सी ड्राइवर बहुत तेज होते हैं। वे सवारी को देखकर ही पहचान लेते हैं कि वे कहाँ जाना चाहते हैं। राजनितिक पार्टियों के बारे में उसकी राय है कि जिस पार्टी के पास जितने अधिक पैसे और गुंडे होंगे उसकी जीत निश्चित है।

शीला संधु :- राजकमल प्रकाशन दिल्ली की संचालिका शीला संधु से हशमत की मुलाकात एक होटल में हुई। उसके बाद कई बार मेल-मिलाप हुआ और उनका परिचय गहरी दोस्ती में बदल गई। हशमत का विचार है कि प्रकाशक पुस्तक स्वीकार कर ले तो दोस्त बन जाता है। जबकि नकार देता है वो दुश्मन बन जाता है।

युवराज सिंह :- हशमत दिल्ली के मनपसंद रेस्तरों में बैठे थे कि एक वेटर ने आकर हशमत के साहित्य की सराहना की और कहा कि वह भी एक उपन्यास लिख रहा है। हशमत ने उससे बात करने के लिए समय निकाला तो पता चला कि वह युवराजसिंह है और अलिगढ़ विश्वविद्यालय से उसने साइकॉलजी में एम.ए.किया है। और वह भी कुछ बनना चाहता है।

अमजद भट्टी :- पंजाब से निकलनेवाली 'पंज दरिया' पत्रिका के सम्पादक हैं। भट्टी से मुलाकात अमृता प्रीतम के यहाँ हुई। मालूम चला कि पंजदरिया की लिपि उर्दू और जबान पंजाबी है। अमजद भट्टी का खानदान विभाजन के समय अमृतसर से उखड़ा था। अमजद को शायरी करने का शौक है। उसकी बानगी में बनावट कम और सादगी ज्यादा है। उनकी खासियत है साफगोई। उन्हें और उनके वतन को हशमत सलाम करते हैं।

दावत में शिरकत :- हशमत एक दावत में पहुँचते हैं। वहाँ कई लेखक मौजूद हैं। हर एक का चेहरा अलग, लिबास अलग। देवेन्द्र सत्यार्थी की बेटी की शादी कल है, लेकिन आज वे यहाँ बैठ कर लिख रहे हैं। बच्चन और उनकी पत्नी तेजी एक साथ आते हुए दिखाई दिए। लोगों ने उन्हें घेर लिया है। जैनेन्द्र गाँधीवादी अदा में पत्नी के साथ खड़े हैं। प्रयाग शुक्ल, मोहन राकेश, नामवर सिंह, नरेशमेहता, निर्मलवर्मा, गोविन्द मिश्र, विष्णुप्रभाकर, प्रभाकर माचवे आदि साहित्यकार मौजूद हैं। हशमत ने देखा कि हर लेखक अपने लिए लेखक है। वह अपने चाहने से लेखक है।

महेन्द्र भल्ला :- कॉफी हाउस में अचानक महेन्द्र भल्ला से मुलाकात हो गई। रंग गोरा, चेहरा-मोहरा किसी भी पंजाबी लड़के का। 'एक पति के नोट्स लिखने के कारण चर्चित। कई कामयाब, अच्छी और चौंकाने वाली कहानियाँ लिख चुके हैं। चर्चा के दौरान महेन्द्र भल्ला के इग्लैण्ड प्रवास की यादें ताजा हो जाती हैं। भल्ला, इग्लैण्ड की साम्राज्यवादी प्रवृत्ति से नफरत करते हैं। हशमत कहते हैं कि तुम इग्लैण्ड से हारकर लौट आए हो। भल्ला जवाब देते हैं - गैर मुल्क में कोई प्रवासी जीत ही नहीं सकता।

रतीकांत झा :- लाइब्रेरी का कर्मचारी है और बीहार का रहने वाला है। हशमत उसके जीवन से

संबंधित सभी जानकारी प्राप्त करते है।

ख्वाब भी देखा तो ऐसा :- किताब पढ़ते-पढ़ते आँख मुंद गई तो ख्वाब में दिल्ली की साफ-सुथरी सड़कें और गाडियाँ दिखाई दीं। तभी बिजली चली गई, पंखा बंद हुआ तो आँख खुल गई। उस समय आँखों के सामने धक्के खाते टकराती गाडियाँ, जेबकतके कंडक्टर दिखाई दिये।

एक शाम :- भीष्म साहनी और शीला ने उनके घर दावत दी। बहुत से साहित्यकार आये। वहाँ जनतन्त्र, साहित्य और संविधान पर चर्चा हुई। निर्मल वर्मा ने अनुवाद पर चर्चा की।

नितिन सेठी :- मित नितिन सेठी से परिचित होने पर पता चला कि वे बलराज साहनी के अंतरंग मित्र है।

गोविन्द मिश्र :- गोविन्द मिश्र निहायत शरीफ और सौम्य व्यक्तित्व के मालिक थे। उनके चेहरे पर खास तरह का आकर्षण है। गोविन्द मिश्र सरकारी अधिकारी भी थे। लोगों ने उनकी आलोचना करते हुए कहा कि मिश्र जी सरकारी अधिकारी होने के कारण, साहित्यकार के रूप में ज़िन्दगी से कट गये है। गोविन्द मिश्र ने इस पर विरोध प्रकट किया। सरकारी अधिकारियों से भिन्न मिश्र जी का व्यक्तित्व देखकर हशमत उनकी इज्जत करते हैं।

मनोहर श्याम जोशी :- हशमत का मत है कि मनोहर श्याम जोशी में एक नेता के सारे गुण हैं। जोशी द्वारा रचित 'कुरु-कुरु स्वाहा' जरूर पढ़ना चाहिए क्यों कि उसमें विभिन्न प्रदेश के अंदाज़ और तेवर विद्यमान हैं।

इक जिंदा जालिम चंगा ए :- हशमत, जनवादी कवि नागार्जुन के साक्षात्कार के लिए (१९८२) तैयार हैं। नागार्जुन की अदा कुछ अलग है, घुमक्कड स्वभाव और बेझिझक कहने का साहस। नागार्जुन की दृष्टि विद्वान पण्डित की है तो हँसी ठेठ किसान की। उन्होंने बौद्ध धर्म का गहरा अध्ययन किया था। उनका रचना संसार सर्वहारा का रचना संसार है।

मुलाकात हशमत से सोबती की:- इसमें अपने आप का विश्लेषण किया गया है। खाने में सोबती को तंदूरी रोटी और मक्खन पसंद हैं।

नामवर सिंह :- आबदार खादी की पोशाक और रख रखाव में बनारसी अदा। वे एक अच्छे वक्ता हैं। भाषा में बौद्धिकता है।

शताब्दी का अवसान अशोक बाजपेयी के बहाने :- ये तीन दशक तक, हिन्दी साहित्य में छाये रहे। हशमत का कहना है कि अशोक की समकालीन समझ कीमती है।

उपेन्द्र नाथ अश्क :- यदि मेज़ी पर न हो तो विरोधों को धूम धड़ाके से पकाते हैं।

अज्ञेय: कलम पुरुष :- प्रयोगवाद के प्रमुख कवि अज्ञेय ने अपने साहित्य में नये-नये प्रयोग किये हैं। वे न भीड की पौध थे न भीड़ का चेहरा। इस कारण उनका लेखन भी विशिष्ट है।

श्रीकान्त वर्मा :- वर्मा भी अपने पिता के समान वकील बन सकते थे, लेकिन उनके विवेक ने साहित्य का चयन किया।

नेमीचन्द्र जैन:- गुण और दोष दोनों पर ध्यान देते हैं।

मंटो:- मंटो के विचार बहुत बेहतरीन और मौलिक हैं।

स्वदेश दीपक:- एक अच्छे इंसान हैं।

कमलेश्वर:- कमलेश्वर का राजनीतिक और साहित्यिक जीवन साधारण नहीं विशिष्ट हैं।

इस प्रकार हिन्दी, उर्दू और पंजाबी भाषा का प्रयोग और जीवनानुभव का प्रवाह 'हम हशमत' की विशिष्टता है। संस्मरण साहित्य में 'हम हशमत' एक जीवन्त दस्तावेज है।

असोसियेट प्रोफेसर
एन.एस.एस.कॉलेज,
पन्तलम, केरल।

N.S.S. COLLEGE PANDALAM
PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam
Scanned with CamScanner